Dr. Keerti Kumar
Assistant Professor (Guest)
Deptt of Psychology
S.R.A.P. College, Bara Chakia, East Champaran
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University, Muz)

Subject - Psychology
Topic - Regionalism
Class - B.A. Part II पत्र Paper
Day - Monday
Date - 21.02.2022
Period 3rd Period.

Contact no - 9801466117 / 6202215708

प्रश्न :- प्रादेशिकता या क्षेत्रवाद के कारण तथा इससे उत्पन्न समस्याओं का वर्णन करें ?

उत्तर :- प्रादेशिकता या क्षेत्रवाद भौगोलिक क्षेत्रों के प्रति मोह अभिव्यक्ति या घृणा का नाम है। मैं लुण्डवर्ग (Lundberg) के शब्दों में — क्षेत्रीयता उस अध्ययन से सम्बन्धित है जिसमें कि एक भौगोलिक क्षेत्र तथा मानव व्यवहार के बीच पाये जाने वाले सम्बन्ध पर बल दिया जाता है। इस रूप में क्षेत्रीयता एक प्रकार की निश्चित परिस्थिति विज्ञान है। क्योंकि इसकी स्थापना विभिन्न देशों के मध्य तथा एक ही क्षेत्र के विभिन्न अंगों के मध्य पाये जाने वाले प्रकार्यात्मक सावयवी सम्बन्धों में है।

इस प्रकार हिन्दी बोलने वाले तथा न बोलने वाले क्षेत्रों में संघर्ष के अतिरिक्त अन्य घटनाएँ जैसे आसाम में असमियों तथा बंगालियों में संघर्ष, महाराष्ट्र में शिवसेना द्वारा दक्षिण भारतीयों का विरोध, तेलांगाना में आन्ध्रों का विरोध, प्रादेशिकता की समस्या की ओर इशारा करता है। भारत में क्षेत्रवाद सदा से रहा है परन्तु आज इसका रूप खतरनाक सिद्ध हो रहा है। आज विभिन्न क्षेत्रों के लोग एक दूसरे को विदेशी समझते लगते हैं प्रत्येक क्षेत्र अपने क्षेत्र के लोगों का पृथक राज्य चाहता है। प्रादेशिकता के आधार पर ही बम्बई राज्य को महाराष्ट्र और गुजरात दो प्रान्त हुए।

क्षेत्रवाद के कारण :- इसके प्रमुख निम्नलिखित कारण हैं।

Ajanta Products Officer

1. ऐतिहासिक कारण :- क्षेत्रवाद और प्रादेशिकता के लिए ऐतिहासिक कारण उत्तरदायी है उदाहरण के लिए- भारत के आर्यों के समय से ही दक्षिण तथा उत्तर के कुछ-न-कुछ भेद अवश्य बना रहा है। उत्तर के अनेक राज्य के राजाओं ने दक्षिण को विजित किया, दक्षिण के शासक ने कभी कोई ऐसा राज्य बनाया जो उत्तरी भारत तक फैला हो। इससे आज भी लोग दक्षिण भारत के लोग अपने क्षेत्र को उत्तरी भारत से अलग समझते हैं।

2. भौगोलिक कारण :- क्षेत्रवाद का प्रमुख कारण भौगोलिक है। अलग-अलग प्रदेशों में रहने वाले लोगों का रहन-सहन, खान-पान, तौर-तरीके, पहनावा, रीति-रिवाज भौगोलिक कुछ-न-कुछ अवश्य भिन्न होता है। इससे उनके मन और घृणा का भाव उत्पन्न होता है।

3. राजनीतिक कारण :- देश में फैले क्षेत्रवाद के मूल के प्रमुख कारण राजनीतिक हैं। भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में राजनीतिक स्वार्थों को लेकर तथा राजनीतिक सत्ता हासिल करने के उद्देश्य से कुछ लोग नए क्षेत्रीय राज्य की माँग करते हैं।

4. मनोवैज्ञानिक कारण :- क्षेत्रवाद के विकास और स्थायित्व में मनोवैज्ञानिक कारणों का महत्व भी बहुत ज्यादा है। अलग-अलग क्षेत्र के लोग यह चाहते हैं कि उनका क्षेत्र सबसे आगे रहे।

5. अन्य कारण :- कुछ अन्य कारणों से भी क्षेत्रवाद और प्रादेशिकता को बढ़ावा मिलता है। जैसे भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में विवाह सम्बन्ध स्थापित नहीं किये जाते। इससे परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध के अवसर कम हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ आर्थिक कारणों से भी क्षेत्रीय भावनाओं में वृद्धि होती है।